04

अध्याय

कीमतें और मुद्रास्फीति

पिछले तीन वर्षों में अर्थव्यवस्था उच्च मुद्रास्फीति से हट कर कम मुद्रास्फीति की राह से गुज़रते हुए संभवत: ढांचागत और स्थायी परिवर्तन के दौर से गुजरी है। सीपीआई मुद्रास्फीति में वर्ष 2016-17 के दौरान गिरावट हुई है जहां सभी वस्तु समूहों में व्यापक स्तर पर कमी आई है। खाद्य मुद्रास्फीति, जो विगत में मुद्रास्फीति की मुख्य प्रेरक रही थी, में इस वर्ष काफी गिरावट हुई जिसकी वजह सामान्य मानसून होने से दालों और सब्जियों की आपूर्ति में सुधार रहा। आधारभूत रूझानों की संकेतक-कोर मुद्रास्फीति में भी पिछले कुछ महीनों में गिरावट हुई है। पिछले कुछ महीनों में सीपीआई-डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति के बीच समाभिरूपता रही है। इसी तरह, ग्रामीण और शहरी मुद्रास्फीति के बीच अंतर भी कम हो रहा है। पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2016-17 में अनेक राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में सीपीआई मुद्रास्फीति में गिरावट देखी गई है।

I. कम मुद्रास्फीति की दिशा में सैद्धान्तिक परिवर्तन?

4.1 क्या भारत कम मुद्रास्फीति की दिशा की ओर स्फीतिकारी प्रक्रिया में सैद्धांतिक परिवर्तन से गुजर रहा है?

4.2 अनुसंधान से पता चलता है कि लगभग पिछले पांच वर्षों में वैश्विक तौर पर और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में भी उपभोक्ता मूल्य से जुड़ी मुद्रास्फीति पेशेवर पूर्वानुमानों से सतत् रूप से कम रही है। भारतीय संदर्भ में, साक्ष्य इसी निष्कर्ष की ओर संकेत करते हैं- हालांकि दीर्घावधिक संदर्भ में, दोनों पक्षों की ओर से त्रुटियो हुई हैं। अभी हाल ही में ऐसे परिवर्तनों पर दृष्टि नहीं गई प्रतीत होती है (क्रमश: चित्र 1 और चित्र 2)।[1क] मिसाल के तौर पर, पिछली 14 तिमाहियों में, छह

चित्र 1. सीपीआई मुद्रास्फीति-आरबीआई पूर्वानुमान और वास्तविक आंकड़े

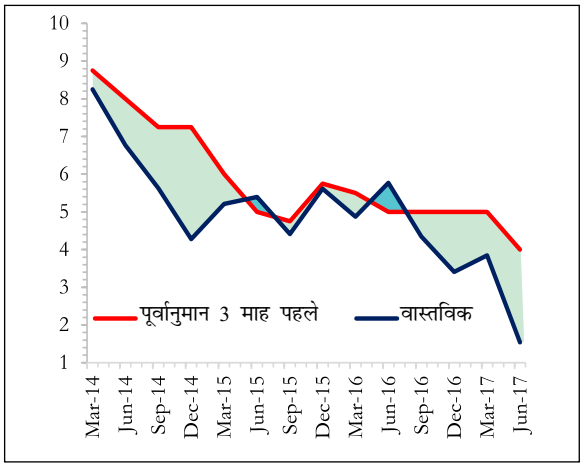

चित्र 2. सीपीआई मुद्रास्फीति- पेशेवर पूर्वानुमान और वास्तविक आंकड़े

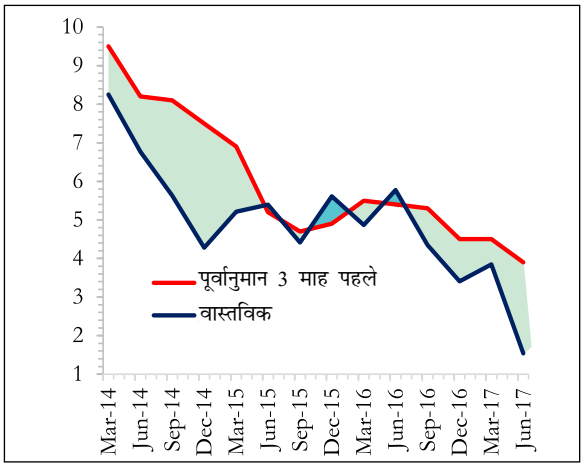

स्रोत: आरबीआई और समीक्षा परिकलन

[1क] चित्र 1 में, मुद्रास्फीति का पूर्वानुमान संबंधित मौद्रिक नीति विवरणों के फैन चार्ट में विश्वास बैंड के मध्य-बिन्दु के रूप में अनुमानित किए गए हैं।

तिमाहियों (2014 में तीन और हालिया अवधि में तीन) में मुद्रास्फीति का 100 से अधिक आधार बिन्दु का अधिक मूल्यांकन किया गया जहां 180 आधार बिन्दु की औसत त्रुटि रही (और वह भी केवल तीन माह पहले के बहुत अल्पावधिक पूर्वानुमान) (चित्र 1)। ध्यातव्य है कि इस अवधि में ये पूर्वानुमान 14 तिमाहियों में से 4 में (मार्च 2014, जून, सितम्बर, दिसम्बर, 2015) परिणामों के 50 आधार बिंदु की परिधि में थे और 1 तिमाही में (दिसम्बर 2015) 25 आधार बिन्दु की परिधि में थे। पेशेवर पूर्वानुमान लगाने वालों का

चित्र 3. दीर्घावधिक मुद्रास्फीति[1ख] (1977-2017)

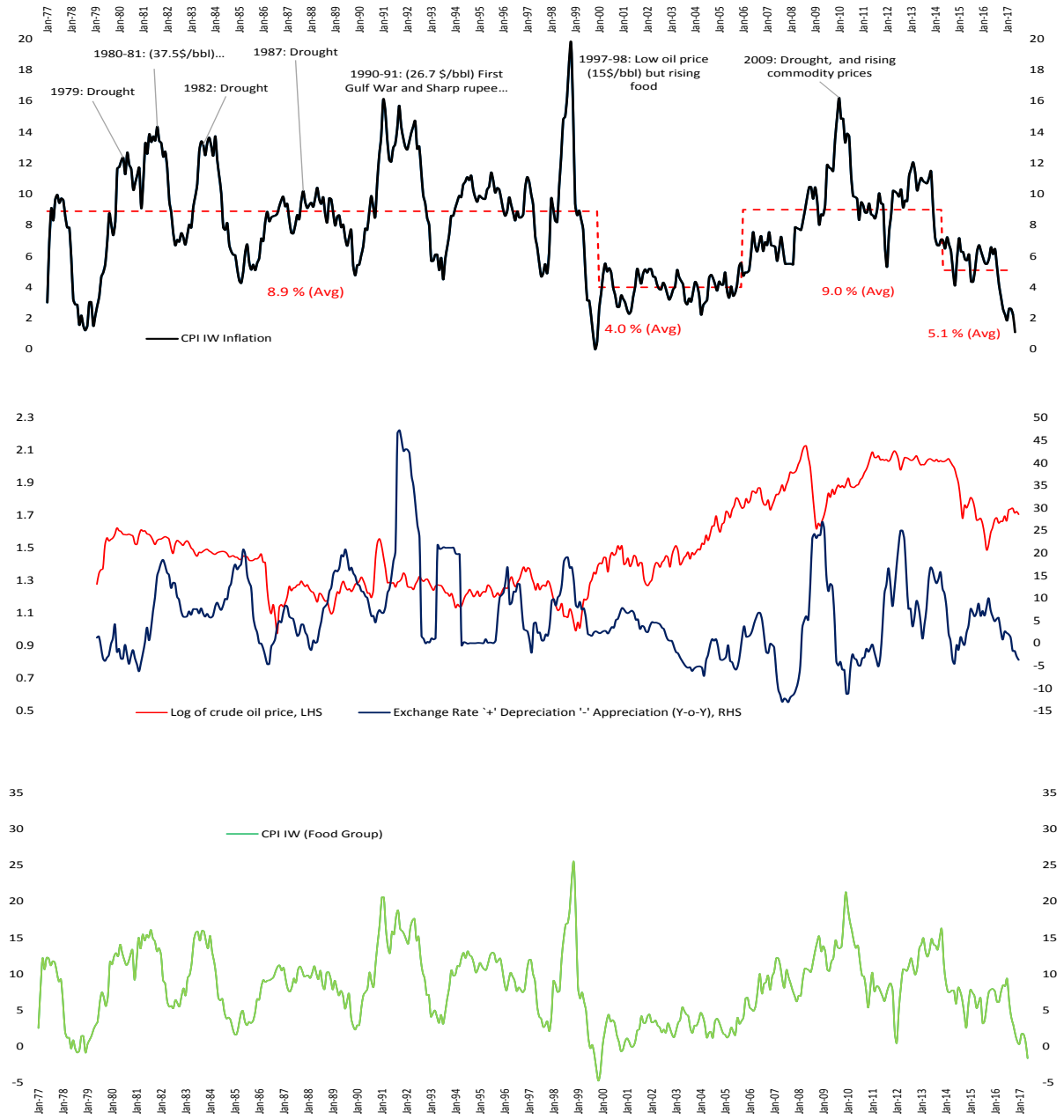

स्रोत: श्रम ब्यूरो, भारतीय रिजर्व बैंक और विश्व बैंक

[1ख] श्रम ब्यूरो द्वारा जारी किए गए औद्योगिक कामगारों के उपभोक्ता कीमत सूचकांक (सीपीआईआईडब्ल्यू) पर आधारित मुद्रास्फीति का प्रयोग किया जाता है क्योंकि यह केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी उपभोक्ता कीमत सूचकांक-संयुक्त (सीपीआई-सी) की नई श्रृंखला पर आधारित मुद्रास्फीति के स्थान पर दीर्घावधिक अवधि के लिए उपलब्ध होती है। आधार वर्ष 1960 (जनवरी, 1977 से सितम्बर, 1988), आधार वर्ष 1982 (अक्टूबर, 1988 से दिसम्बर, 2005), आधार वर्ष 2001 (जनवरी, 2006 से मई, 2017) के लिए सीपीआई-आईडब्ल्यू मुद्रास्फीति आंकड़े इस्तेमाल किए गए हैं। सीपीआई-आईडब्ल्यू और सीपीआई-आईसी आधारित मुद्रास्फीति 0.9383 के सहसंबंध गुणांक के काफी निकट रहती है। (जनवरी, 2012 से अप्रैल, 2017 की अवधि में)। कच्चा तेल क्रूड ब्रेंट (वैश्विक समूह) है। विनिमय दर रूपए प्रति अमरीकी डालर है।

भी रिकार्ड ऐसा ही रहा है (चित्र 2)। पूर्वानुमान की तुलना में वास्तविक तौर पर कम मुद्रास्फीति तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों के स्थायी रूप से गिर जाने जैसी असाधारण घटनाओं को परिलाक्षित कर सकती है।

4.3 आगे सवाल यह है कि क्या मुद्रास्फीति में कोई सैद्धान्तिक परिवर्तन हो रहा है और मौद्रिक प्रबंधन के लिए इसका क्या अर्थ है।

4.4 पहले चित्र 3 में दिखाए गए भारत में मुद्रास्फीति के दीर्घावधिक परिप्रेक्ष्य पर विचार करें। पिछले चार दशकों में (1977 से शुरू करके), मूल रूप से चार दौर रहे हैं: लगभग 23 वर्ष तक औसतन 9 प्रतिशत की उच्च मुद्रास्फीति: वर्ष 2000 और 2005 के बीच पांच वर्ष के लिए लगभग 4 प्रतिशत की कम मुद्रास्फीति; 2006-14 की अवधि में मुद्रास्फीति की जोरदार वापसी जो लगभग 9 प्रतिशत हो गई; और अपेक्षाकृत कम, संभवत: बहुत कम मुद्रास्फीति का नया दौर।[2क]

4.5 चित्र 3 मुद्रास्फीति के संचालकों को समझने में सहायता करता है। मुख्यत: उच्च मुद्रास्फीति और विशेषकर शीर्ष मुद्रास्फीति, वस्तु-मूल्यों में वृद्धि विशेषकर तेल की कीमतों और कृषि कीमतों में वृद्धि के साथ-साथ चलती है; और कुछ मामलों में वे विनिमय दर में तेजी से हुए परिवर्तनों जैसे बिल्कुल ही अलग कारकों की वजह से भी होती है।

4.6 इसलिए, यदि तेल बाजार में और शायद घरेलू कृषि में भी कोई ढांचागत परिवर्तन होते हैं तो स्फीतिकारी प्रक्रिया भी ढांचागत परिवर्तनों से गुजर सकती है। जैसाकि नीचे वर्णन किया गया है, ऐसा विश्वास करने के कारण अवश्य हैं कि दोनों परिवर्तन हो रहे हैं।

तेल

4.7 अब यह बात लगभग स्वाभाविक प्रतिक्रिया बन चुकी है कि भू-राजनीति का ज़िक्र तेल की कीमतों और इसीलिए उनसे आगे घरेलू मुद्रास्फीति से जुड़े जोखिमों की सूची में किया जाए। लेकिन इन जोखिमों में संभवत: काफी कमी भी हो रही है। आज तेल बाजार कुछ साल पहले के बाजार की तुलना में इस अर्थ में बहुत भिन्न हो चुका है, जो तेल की कीमतों में कमी, अथवा कम से कम तेल की कीमतों में वृद्धि के जोखिमों को समाप्त कर रहा है।

4.8 हाइड्रोलिक फ्रैक्चरिंग जैसी परिष्कृत नई प्रौद्योगिकी की मेहरबानी से शेल ऑयल और गैस के दोहन के चलते, ओपेक-भिन्न बाजारों विशेषकर उत्तरी अमरीका से तेल की आपूर्ति में बढ़ोतरी हो गई है। इसके अलावा, इस आपूर्ति की दो महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। यह 50 डालर प्रति बैरल की कीमत के आसपास की दर पर लाभकारी है और इसकी आपूर्ति कहीं कम पूंजी लागत होने के कारण परंपरागत तेल के मुकाबले, कीमत संबंधी परिवर्तनों के प्रति तेजी से प्रभावित होती है। परिणामस्वरूप, अब तेल की कीमतों पर ओपेक का उतना नियंत्रण नहीं है, जितना पहले होता था। चित्र 4 में ओपेक की क्षमता परिवर्तन तथा तेल कीमतें दर्शायी गई हैं। वर्ष 2014 से पहले, यह दोनों साथ-साथ चलती थीं, लेकिन तब से दोनों पूरी तरह अलग-थलग हो गई हैं।

4.9 चित्र 5 में विश्वव्यापी शेल रिगों की संख्या और तेल कीमतों को प्रदर्शित किया गया है। यहां भी यह संबंध असाधारण है, जहां रिग की क्षमता कीमतें कम होने पर गिरती है और तेल की कीमतों में बढ़ोत्तरी होने पर तत्काल बढ़ती है।[2ख] शेल का यह अकार्डियन जैसा स्वरूप तथा इस अनुमान के साथ कि अर्थक्षमता 50 डालर प्रति बैरल के आस-पास ही हासिल की जाती है, का अर्थ यह है कि तेल की कीमतों पर कुल मिलाकर रोक लगा दी गई है।

4.10 इसलिए, भविष्य की बात करें तो, ऐसा नहीं है कि ये कीमतें अस्थिर नहीं होंगी या 50 डालर की ''सीमा'' से ऊपर कभी नहीं बढ़ेंगी। लेकिन शेल प्रौद्योगिकी यह जरूर सुनिश्चित करेगी कि कीमतें इस सीमा से ऊपर बहुत देर तक न रह सकें क्योंकि शीघ्र आपूर्ति की प्रक्रिया इन कीमतों को वापस शेल उत्पादन की सीमांत लागत की ओर ले जाएगी। नवीकरणीय स्रोतों की लागत और कीमतों में हुई जबरदस्त गिरावट इस रूझान को केवल अधिक बल ही देगी।

[2क] हैडलाइन सीपीआई मुद्रास्फीति अब 2 प्रतिशत से कम है किंतु परिष्कृत कोर भी (जो सभी अस्थिर खाद्य और ईंधन घटकों से अधिक रहती है) अब 4 प्रतिशत से कम हो गयी है। यह लगभग 9 प्रतिशत की भारत की दीर्घावधिक मुद्रास्फीति की औसत की तुलना में भी काफी और जुलाई, 2011 से आगे सीपीआई नई श्रृंखला में 6.8 प्रतिशत की परिष्कृत कोर मुद्रास्फीति की औसत से बेहतर है।

[2ख] इसी प्रकार का संबंध रिग प्रवाह और तेल कीमतों के बीच है।

चित्र 4. ओपेक की गिरती बाजार शक्ति?

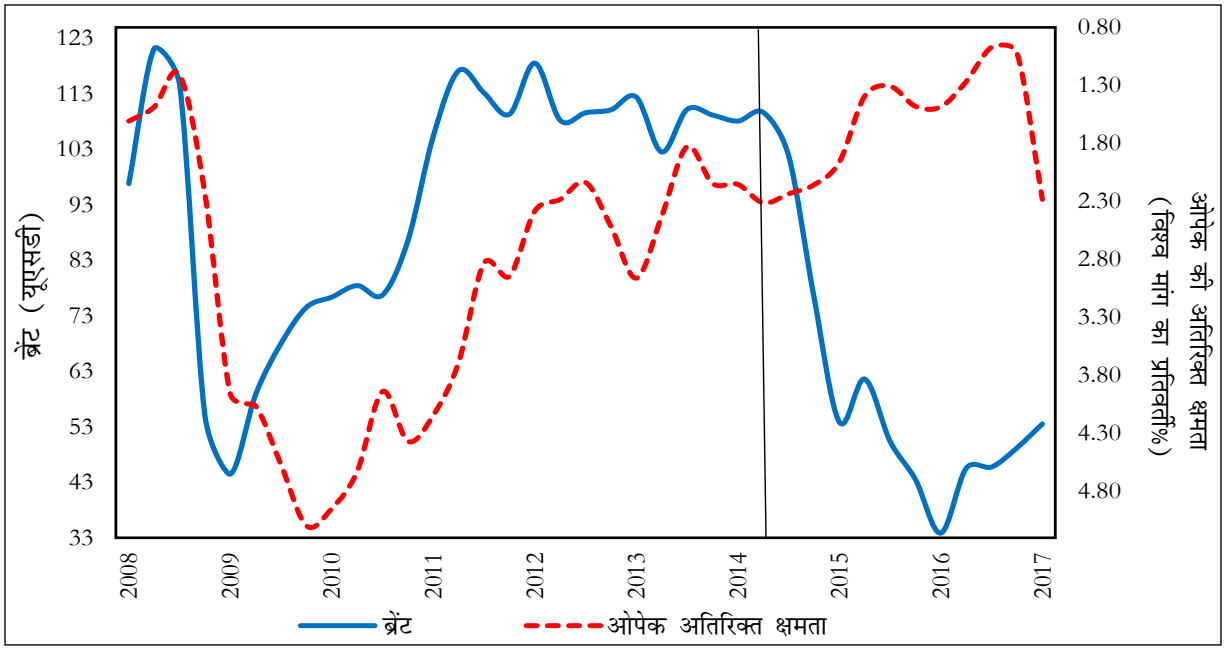

स्रोत: यू.एस. ऊर्जा सूचना प्रशासन (यूएसईआईए)

चित्र 5. शेल "अकार्डियन"

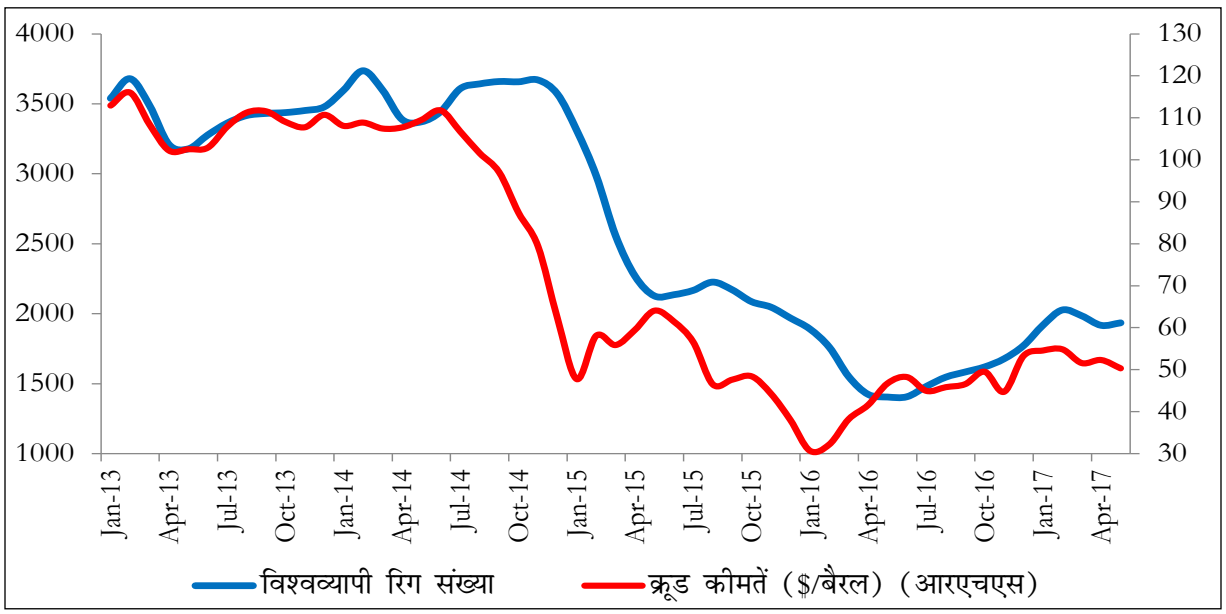

स्रोत: बेकर ह्यूज और यूएसईआईए

4.11 संक्षेप में, भू-राजनीतिक जोखिम पहले की तरह खतरनाक नहीं रहे हैं प्रौद्योगिकी ने भारत को भू-अर्थव्यवस्था (ओपेक) और भू-राजनीति (मध्य-पूर्व) के परिवर्तनों के प्रति कम संवदेनशील बना दिया है। यदि ये परिवर्तन स्थायी हों और जिस हद तक स्थायी हों तो स्फीतिकारी प्रक्रिया के लिए उन परिणामों को ध्यान में रखना होगा।

II. विभिन्न मद समूहों और राज्यों के बीच मुद्रास्फीति में अंतर

4.12 उपभोक्ता कीमत सूचकांक-संयुक्त (सीपीआई-सी) पर आधारित मुद्रास्फीति में 2012 के लगभग 9 प्रतिशत के स्तर से गिरावट का रुख देखा गया है जो 2017 में लगभग 3 प्रतिशत के स्तर पर आ गई, सिवाय वर्ष 2013 के जब यह बढ़कर लगभग 10 प्रतिशत हो गई

थी। चित्र 6 में सभी प्रमुख मद समूहों में मुद्रास्फीति के परिवर्तन दिखाए गए हैं। वर्ष 2013 के मध्य से शुरू करते हुए, सब्जियों में व्याप्त मुद्रास्फीति शेष मद समूहों की तुलना में वर्ष भर लगातार अधिक बनी रही है (नवम्बर, 2013 में लगभग 70 प्रतिशत की ऊंचाई पर पहुंच गई)। दालों में व्याप्त मुद्रास्फीति मई, 2015 से काफी अधिक बढ़नी शुरू हो गई है और यह 2016 के मध्य तक शेष मद समूहों से अधिक रही है। समग्र रूप से, मुख्य मद समूहों (चित्र 6) और मुख्य राज्यों (चित्र 7) में इस अवधि (2012-17) में कोई निश्चित रूझान नहीं देखा गया; तथापि वर्ष 2016 से विभिन्न मद समूहों में कम परिवर्तनीयता रही है।

III. मुद्रास्फीति के मौजूदा रुझान

4.13 उपभोक्ता कीमत सूचकांक-संयुक्त (सीपीआई-सी) और थोक कीमत सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) दोनों के संदर्भ में मुद्रास्फीति हालिया वर्षों में कम होती रही है जहां 2015-16 में तो डब्ल्यूपीआई ने नकारात्मक वृद्धि दर्ज की। इसके मुख्य पहलुओं में ये शामिल हैं: हेडलाइन मुद्रास्फीति में निरपेक्ष गिरावट, सीपीआई और डब्ल्यूपीआई में समाभिरूपता, विभिन्न वस्तु समूहों, विशेषकर खाद्य समूहों में मुद्रास्फीति में गिरावट, ग्रामीण और शहरी मुद्रास्फीति के बीच अंतर का कम होना और विभिन्न राज्यों में मुद्रास्फीति में गिरावट।

चित्र 6. उपभोक्ता कीमत सूचकांक-संयुक्त के संबंध में समूहों के अंतर्गत प्रमुख मदों में परिवर्तनशीलता[3]

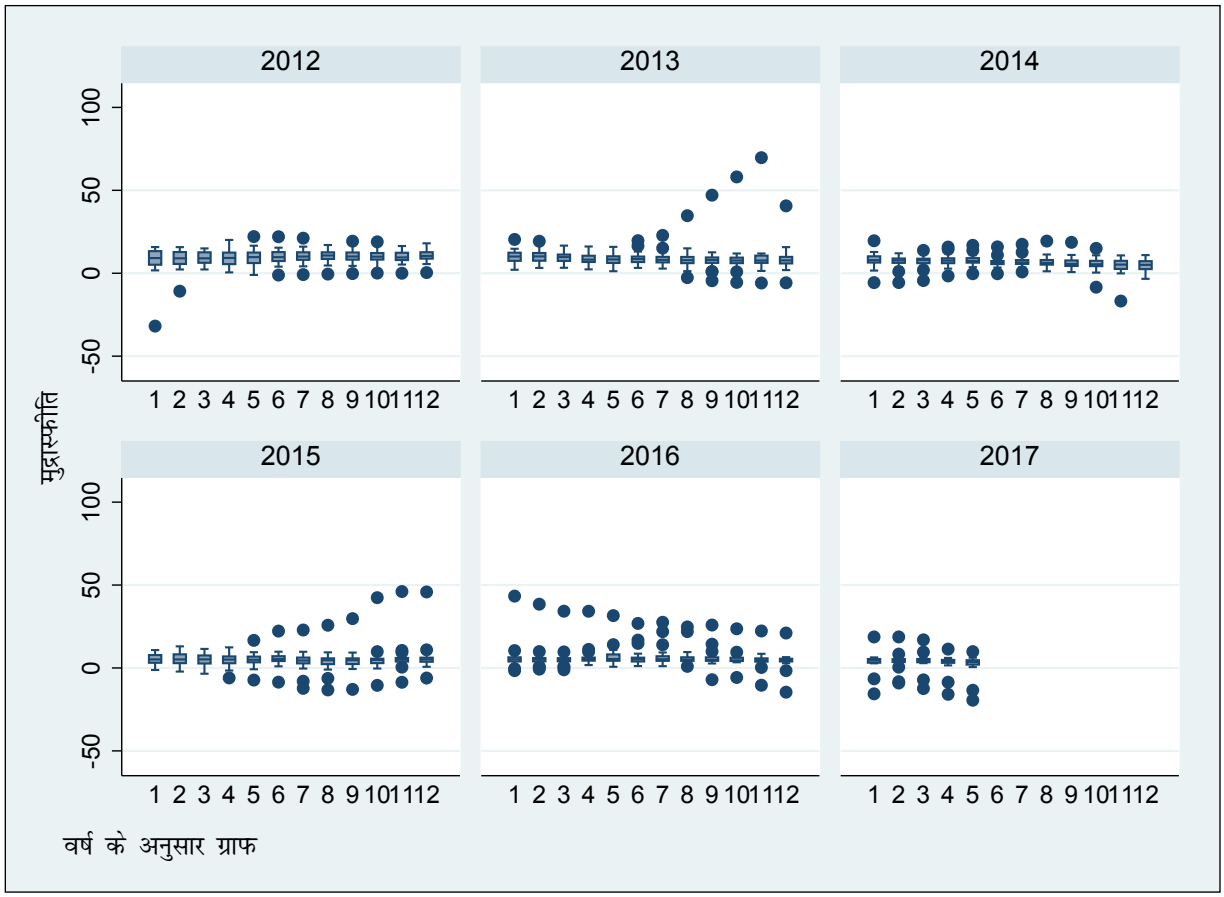

***स्रोत:* सीएसओ, समीक्षा परिकलन**

[3] बॉक्स और व्हिस्कर प्लॉट के जरिए दिखाए गए चित्र से वितरण की विशेषताओं का अध्ययन करना हमारे लिए सरल हो जाता है। बाक्स इन्टरक्वार्टाइल रेंज दिखाता है अर्थात् वितरण का 75वां और 25वां बिन्दु। बाक्स में क्षैतिज रेखा वितरण की माध्यिका दर्शाती है, और व्हिस्कर बाक्स से अधिकतम और न्यूनतम मूल्यों तक जाने वाली रेखाएं हैं। यदि डाटा के मूल्य क्वार्टाइल से बहुत दूर हों तो उन्हें बाध्य मानें (चित्र में बिन्दु द्वारा प्रदर्शित) के रूप में निर्दिष्ट किया जाता है। बाहरी मान की मानक परिभाषा ऐसी संख्या है जो Q1 अथवा Q3 से क्रमशः IQR(IQR=Q_3-Q_1) से 1.5 गुना कम या अधिक है। अर्थात्, बाहरी मान ऐसी कोई भी संख्या है जो Q_1 (1-5 X IQR) से कम है अथवा Q_3 + (1.5 x 5QR) अधिक है।

चित्र 7. उपभोक्ता कीमत सूचकांक-संयुक्त के संदर्भ में प्रमुख राज्यों की मुद्रास्फीति में परिवर्तनशीलता (2012-2017)

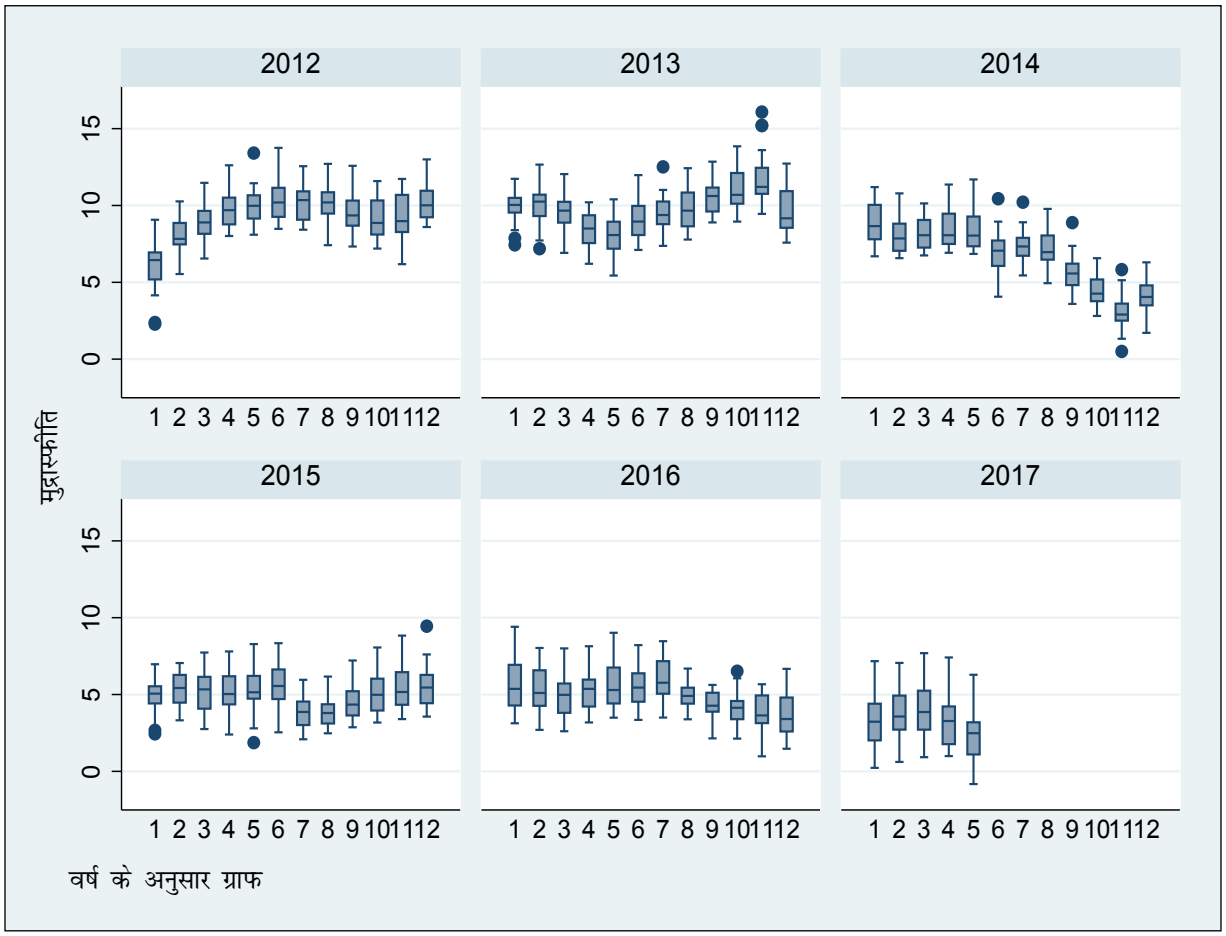

स्रोत: **सीएसओ, समीक्षा परिकलन**

4.14 पहला, विभिन्न कीमत सूचकांकों में मुद्रास्फीति में तीव्र गिरावट देखी गई है। हेडलाइन सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति 2014-15 में 5.9 प्रतिशत और 2015-16 के 4.9 प्रतिशत से तेजी से कम होकर 2016-17 में 4.5 प्रतिशत पर आ गई है। सीपीआई मुद्रास्फीति पिछले आठ महीनों से 4 प्रतिशत से कम रही है तथा यह कम होकर जून, 2017 में 1.5 के स्तर पर पहुंच गई थी (2012 में श्रृंखला शुरू किए जाने के बाद से निम्नतम)। सीपीआई-औद्योगिक कामगार (आईडब्ल्यू) आधारित मुद्रास्फीति पिछले वर्ष के 5.6 प्रतिशत से कम होकर 2016-17 में 4.1 प्रतिशत रह गई है। यह मई, 2017 में 1.1 प्रतिशत के निम्न स्तर तक आ पहुंची। 2011-12 के आधार वर्ष के साथ थोक कीमत सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) के अनुसार, वैश्विक वस्तु कीमतों में वृद्धि के चलते मुद्रास्फीति 2015-16 के -3.7 प्रतिशत से बढकर 1.7 प्रतिशत हो गई। पिछले पांच वर्षों के मूल्य सूचकांकों की मुख्य श्रृंखलाओं पर आधारित मुद्रास्फीति की एक तुलनात्मक तस्वीर सारणी-1 में दी गई है।

4.15 दूसरा, सीपीआई और डब्ल्यूपीआई आधारित मुद्रास्फीति के बीच समाभिरूपता एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है। सीपीआई और डब्ल्यूपीआई आधारित मुद्रास्फीति के बीच अंतर जो सितंबर, 2015 में 10 प्रतिशतांक के चरम स्तर तक बढ़ गया था, मई, 2017 में खत्म हो गया, जब सीपीआई और डब्ल्यूपीआई आधारित दोनों प्रकार की मुद्रास्फीति 2.2 प्रतिशत हो गयी (चित्र 8)। वार्षिक आधार पर वर्ष 2014-15 में 4.7 प्रतिशतांक से बढ़कर वर्ष 2015-16 में 8.6 प्रतिशत तक होने के बाद दोनों के बीच अंतर कम होकर 2016-17 में 2.8 प्रतिशत हो गया (सारणी 1)। यह समाभिरूपता मुख्यत: विक्रेय वस्तुओं, जो डब्ल्यूपीआई समूह का मुख्य हिस्सा हैं, के मजबूत होने तथा थोक कीमत सूचकांक के लिए आधार वर्ष 2004-05 से संशोधित करके उसे 2011-12 किए जाने के कारण हुई कही जा सकती है।

सारणी 1. विभिन्न कीमत सूचकांकों पर आधारित सामान्य मुद्रास्फीति (प्रतिशत में)

	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
थोक कीमत सूचकांक	6.9	5.2	1.2	-3.7	1.7
उपभोक्ता कीमत सूचकांक (संयुक्त)	10.2	9.5	5.9	4.9	4.5
उपभोक्ता कीमत सूचकांक (आईडब्ल्यू)	10.4	9.7	6.3	5.6	4.1
उपभोक्ता कीमत सूचकांक (एएल)	10.0	11.6	6.6	4.4	4.2
उपभोक्ता कीमत सूचकांक (आरएल)	10.2	11.5	6.9	4.6	4.2

स्रोत: थोक कीमत सूचकांक के लिए औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग, उपभोक्ता कीमत सूचकांक (संयुक्त) के लिए केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय तथा उपभोक्ता कीमत सूचकांक (आईडब्ल्यू), सीपीआई (एएल), सीपीआई (आरएल) के लिए श्रम ब्यूरो।

टिप्पणी: 2012-13 और 2013-14 के लिए उपभोक्ता कीमत सूचकांक (संयुक्त) मुद्रास्फीति पुरानी 2010 = 100 श्रृंखला पर आधारित है। आईडब्ल्यू का अर्थ औद्योगिक कामगार से, एएल का अर्थ कृषि श्रमिकों से तथा आरएल का अर्थ ग्रामीण श्रमिकों से है।

चित्र 8. थोक कीमत सूचकांक और उपभोक्ता कीमत सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति (प्रतिशत में)

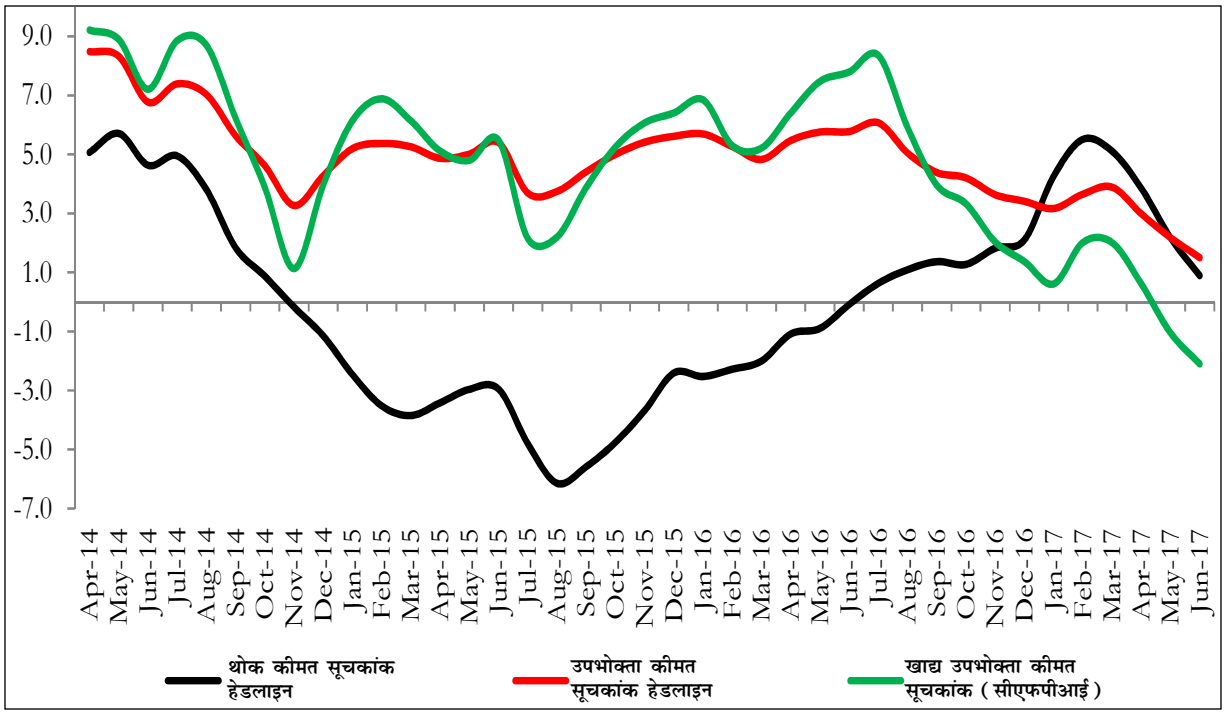

स्रोत: डीआईपीपी और सीएसओ

4.16 तीसरा, सभी वस्तु समूहों की मुद्रास्फीति में व्यापक आधार पर गिरावट का रूख रहा है, इनमें सबसे महत्वूपर्ण खाद्य समूह में गिरावट रही है। उपभोक्ता खाद्य कीमत सूचकांक (सीएफपीआई) पर आधारित खाद्य मुद्रास्फीति 2014-15 में 6.4 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2015-16 में 4.9 प्रतिशत तथा और घटकर 2016-17 में 4.2 प्रतिशत हो गयी है। दालों, सब्जियों और चीनी में उच्च मुद्रास्फीति ने हालांकि 2016-17 के प्रारंभ में सीएफपीआई पर कुछ दबाव डाला है, फिर भी अनुकूल मानसून के कारण अनाजों और दालों के उत्पादन में हुई वृद्धि के कारण दूसरी छमाही में सीपीआई खाद्य मुद्रास्फीति में कमी हुई है। दालों की कीमतों में अस्थिरता को कम करने के लिए, सरकार ने घरेलू खरीद और आयात के जरिए लगभग 19 लाख टन का बफर स्टॉक निर्मित किया है। सब्जियों की कीमत, जो आमतौर पर ग्रीष्मकालीन मौसम में कम आपूर्ति के कारण बढ़ जाती हैं, पिछले कुछ महीनों में तेजी से गिरी हैं क्योंकि आपूर्ति बढ़ी है। परिणामस्वरूप सितंबर, 2016 से सब्जियों में सीपीआई मुद्रास्फीति नकारात्मक रही है। चीनी की मुद्रास्फीति कम उत्पादन और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत के बढ़ने के

कारण वर्ष 2016-17 के दौरान लगातार अधिक रही है। पिछले कुछ महीनों में चीनी की कीमत थोक और खुदरा दोनों स्तर पर कम हुई है। सीपीआई और डब्ल्यूपीआई के आधार पर खाद्य मुद्रास्फीति का ब्यौरा क्रमशः सारणी 2 और 3 में दर्शाया गया है।

सारणी 2. सीपीआई के चयनित समूहों में मुद्रास्फीति - आधार वर्ष 2012 (प्रतिशत में)

विवरण	भारांश	2015-16	2016-17	जून-16	मई-17	जून-17 (पी)
सभी समूह	100	4.9	4.5	5.8	2.2	1.5
सीएफपीआई*	39.1	4.9	4.2	7.8	-1.0	-2.1
खाद्य और पेय पदार्थ	45.9	5.1	4.4	7.5	-0.2	-1.2
अनाज और उत्पाद	9.7	1.8	4.2	3.1	4.8	4.4
मांस और मछली	3.6	6.3	5.6	6.6	1.8	3.5
अण्डे	0.4	2.3	6.7	5.5	0.7	-0.1
दूध और उत्पाद	6.6	5.2	4.1	3.4	4.6	4.1
तेल और वसा	3.6	4.3	4.0	4.0	2.7	2.3
फल	2.9	1.5	4.8	2.8	1.4	2.0
सब्जियां	6.0	1.4	-2.2	14.8	-13.4	-16.5
दालें और उत्पाद	2.4	31.9	9.3	26.9	-19.5	-21.9
चीनी तथा मिष्ठान	1.4	-7.0	19.6	16.8	9.8	8.7
ईंधन और प्रकाश	6.8	5.3	3.3	2.9	5.5	4.5
खाद्य और ईंधन समूह को छोड़कर सीपीआई	47.3	4.6	4.8	4.4	4.2	4.0

स्रोत: सीएसओ पी: अनंतिम *उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक

सारणी 3. थोक कीमत सूचकांक के चयनित समूहों में मुद्रास्फीति -आधार वर्ष 2011-12 (प्रतिशत में)

	भारांश	2015-16	2016-17	जून-16	मई-17 (पी)	जून-17 (पी)
सभी वस्तुएं	100	-3.7	1.7	-0.1	2.2	0.9
खाद्य सूचकांक	24.4	1.2	5.8	8.0	0.1	-1.2
खाद्य वस्तु	15.3	2.6	4.0	7.8	-2.3	-3.5
अनाज	2.8	1.1	8.7	9.5	4.1	1.9
दालें	0.6	34.8	17.6	27.3	-19.7	-25.5
सब्जियां	1.9	-8.6	-5.3	18.6	-18.5	-21.2
फल	1.6	0.1	6.0	6.0	-0.7	-0.1
दूध	4.4	3.1	2.9	2.3	4.5	4.1
अण्डे, मांस और मछली	2.4	1.5	0.8	2.3	-1.0	1.9
खाद्य उत्पाद	9.1	-1.5	9.5	8.7	4.8	3.1
चीनी	1.1	-9.8	28.8	29.8	12.8	10.7
खाद्य तेल	2.6	-3.2	8.4	4.1	2.1	1.5
ईंधन और बिजली	13.2	-19.7	-0.2	-11.6	11.7	5.3
खाद्य भिन्न विनिर्मित उत्पाद (कोर)	55.1	-1.8	-0.1	-1.8	2.1	2.1

स्रोत: डीआईपीपी पी: अनंतिम

4.17 पिछले तीन वर्षों में हैडलाइन और खाद्य मुद्रास्फीति में देखी गई उल्लेखनीय गिरावट के साथ, सीपीआई आधारित परिष्कृत कोर[4] मुद्रास्फीति 2015-16 के 5.2 प्रतिशत से कम होकर 2016-17 में 4.9 प्रतिशत के स्तर पर आ गई है। हालांकि सीपीआई आधारित कोर[5] मुद्रास्फीति 2015-16 के 4.6% से मामूली सा बढ़कर 2016-17 में 4.8% हो गयी है। सीपीआई आधारित कोर मुद्रास्फीति के सभी पैमानों में पिछले कुछ महीनों में गिरावट का रुख रहा है। (चित्र 9)।

4.18 वर्ष 2016-17 की पहली छमाही के दौरान, जहां सीपीआई मुद्रास्फीति मुख्यत: खाद्य मदों से संचालित थी, वहीं विविध समूह मूलत: सेवा समूह था जिसने दूसरी छमाही में उल्लेखनीय योगदान किया। (चित्र 10)। आवास क्षेत्र ने भी शहरी इलाकों में सामान्य मुद्रास्फीति में

चित्र 9. उपभोक्ता कीमत सूचकांक आधारित कोर मुद्रास्फीति (प्रतिशत में)

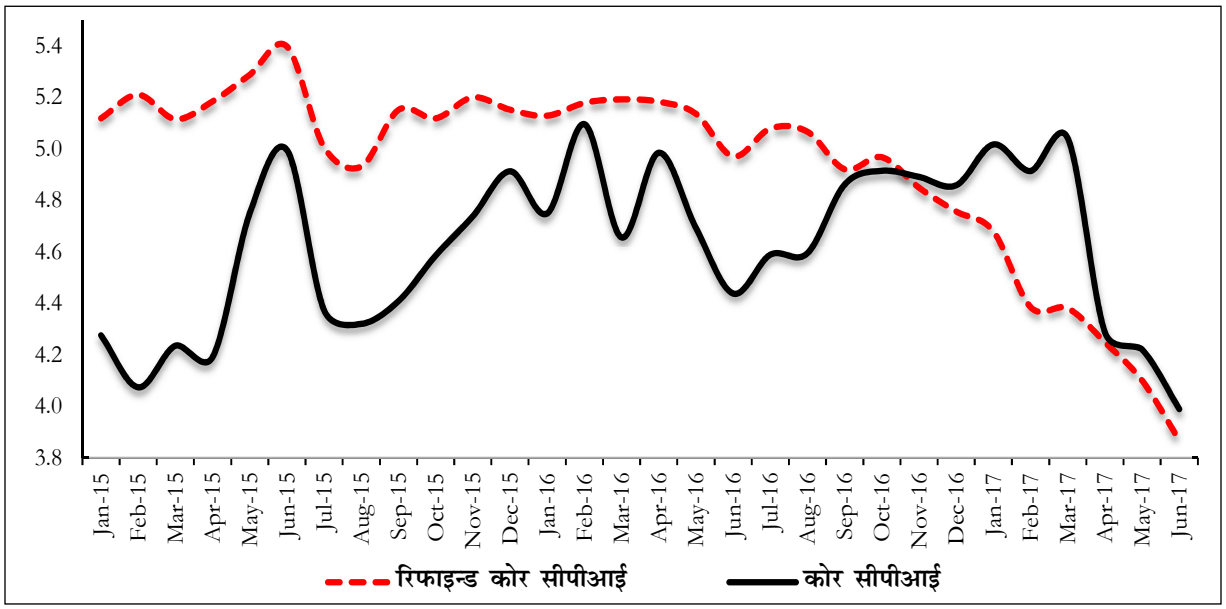

स्रोत: सीएसओ, समीक्षा परिकलन

चित्र 10. वर्ष 2016-17 के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में सीपीआई मुद्रास्फीति में योगदान

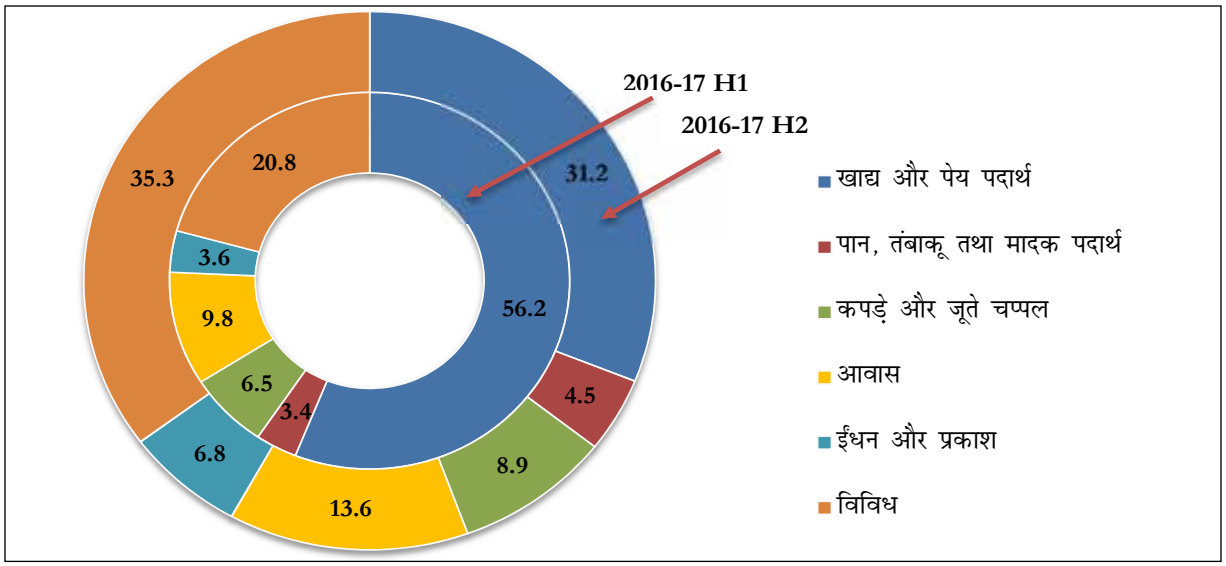

स्रोत: सीएसओ, समीक्षा परिकलन

[4] सीपीआई जिसमें खाद्य और ईंधन समूह, पेट्रोल और डीजल शामिल नहीं हैं।

[5] सीपीई जिसमें खाद्य और ईंधन समूह शामिल नहीं हैं।

योगदान किया। सीपीआई मुद्रास्फीति का वस्तुओं (भारांश 76.6%) और सेवाओं (भारांश 23.4%) के रूप में दिया गया ब्यौरा अगस्त, 2016 के बाद से वस्तु मुद्रास्फीति में तेजी से हुई गिरावट दर्शाता है (चित्र 11)। तथापि, सेवा मुद्रास्फीति उच्च स्तर पर बनी रही और यह 2016-17 के दौरान लगभग 5% के आसपास मंडरा रही थी तथा इसकी मुख्य संचालक स्वास्थ्य, शिक्षा, मकान किराया, हवाई किराए से जुड़ी उच्च मुद्रास्फीति रही थी।

4.19 चौथा, हालांकि ग्रामीण और शहरी मुद्रास्फीति दोनों में गिरावट हुई है, फिर भी शहरी मुद्रास्फीति में हुई गिरावट ग्रामीण मुद्रास्फीति के मुकाबले अधिक रही है। हालिया महीनों में इन दोनों के बीच अंतर में काफी कमी हुई है (चित्र 12)। सीपीआई (ग्रामीण) पर आधारित ग्रामीण मुद्रास्फीति 2014-15 के 6.2 प्रतिशत और 2015-16 के 5.6 प्रतिशत से कम होकर 2016-17 में 5.0 प्रतिशत के स्तर पर आ गयी। सीपीआई (शहरी) पर आधारित शहरी मुद्रास्फीति 2014-15 के 5.7 प्रतिशत और 2015-16 के 4.1 प्रतिशत से कम होकर 2016-17 में 4.0 प्रतिशत के स्तर पर आ गयी। शहरी मुद्रास्फीति ग्रामीण मुद्रास्फीति के मुकाबले अपेक्षाकृत कम स्तर पर बनी रही है और यह अंतर मुख्यत: ग्रामीण और शहरी उपभोग समूह में मदों के भारांश में अंतर के कारण है। सीपीआई के ग्रामीण समूह मे अनाज, सब्जियों, मीट और मछली तथा दालों को काफी अधिक भारांश दिए गए हैं।

4.20 उपभोक्ता कीमत सूचकांक पर आधारित ग्रामीण और शहरी मुद्रास्फीति के बीच व्याप्त अंतर में तब तेजी से वृद्धि होती है, जब भी खाद्य और पेय पदार्थ समूह (ग्रामीण समूह में 54.2 प्रतिशत का भारांश और शहरी समूह में 36.3 प्रतिशत का भारांश) की मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी होती है। (चित्र 13)। ग्रामीण क्षेत्र के लिए ईंधन और प्रकाश समूह संबंधी मुद्रास्फीति (भारांश 7.9 प्रतिशत), जो इस संपूर्ण अवधि में शहरी क्षेत्र के ईंधन और प्रकाश समूह संबंधी मुद्रास्फीति (भारांश 5.6 प्रतिशत) से अधिक रही है, भी ग्रामीण मुद्रास्फीति में वृद्धि होती है। ईंधन लकड़ी और उसके टुकड़े तथा उपले, जो सीपीआई समूह में 2.5 प्रतिशत भारांश रखते हैं (मुख्यत: ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़े हुए), में भी उच्च मुद्रास्फीति और अस्थिरता देखी जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में विविध समूह (27.3 प्रतिशत के भारांश वाली उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं एवं सेवाएं) की मुद्रास्फीति शहरी क्षेत्रों के विविध समूह (भारांश 29.5 प्रतिशत) की मुद्रास्फीति से अक्सर अधिक रही है। इसकी वजह ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अवसंरचनागत अंतर को माना जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं और सेवाओं की विपणन लागतों में वृद्धि हो जाती है।

चित्र 11. वस्तु और सेवाओं में सीपीआई मुद्रास्फीति (प्रतिशत)

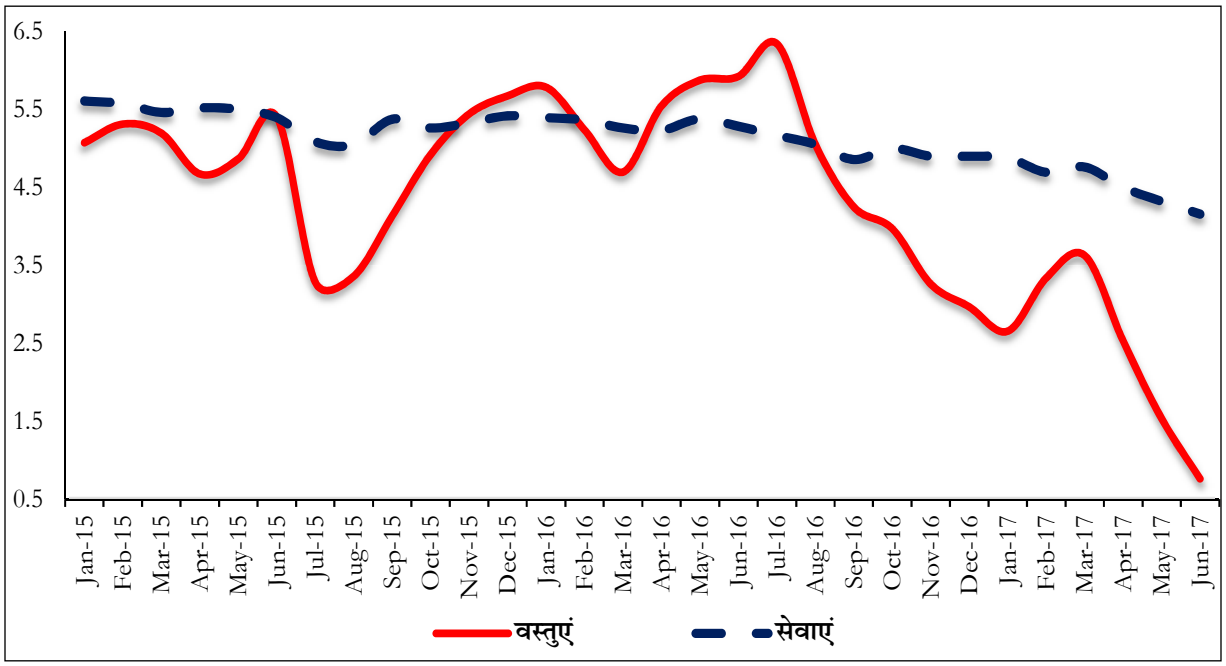

स्रोत: सीएसओ, समीक्षा परिकलन

चित्र 12. सीपीआई ग्रामीण तथा शहरी मुद्रास्फीति

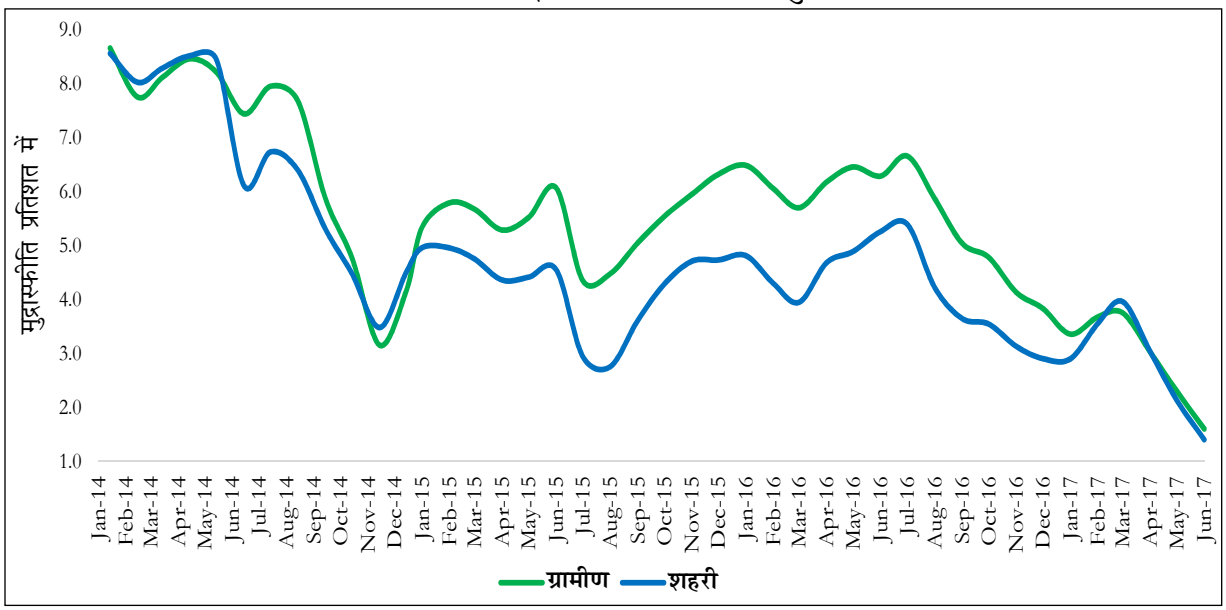

स्रोत: सीएसओ, समीक्षा परिकलन

चित्र 13. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के बीच मुद्रास्फीति अंतर (प्रतिशतांक)

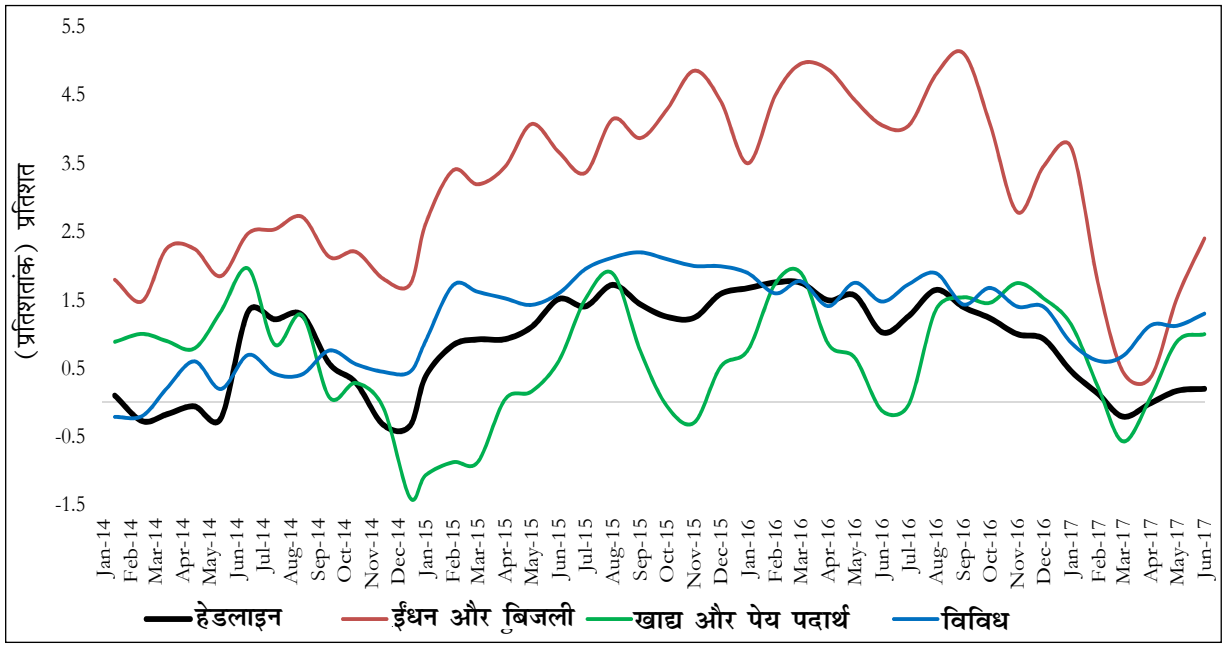

स्रोत: सीएसओ, समीक्षा परिकलन

4.21 अंततः, वर्ष 2016-17 के दौरान, खाद्य मुद्रास्फीति में तेजी से हुई गिरावट के कारण अनेक राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में सीपीआई मुद्रास्फीति में गिरावट देखी गई (चित्र 14 और 15)। 11 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में मुद्रास्फीति 4 प्रतिशत के लक्ष्य से कम रही है। कुछ पूर्वोत्तर राज्यों, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह तथा तेलंगाना को छोड़कर, सभी राज्यों में संशोधित आरबीआई अधिनियम के अनुसरण में निर्धारित 6 प्रतिशत के ऊपरी सहिष्णुता स्तर से कम रही है। जहां चार प्रमुख राज्यों कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और छत्तीसगढ़ में 2015-16 के दौरान 6% से अधिक की मुद्रास्फीति देखी गई थी, वहीं 2016-17 में केवल तेलंगाना में 6% से अधिक की मुद्रास्फीति दर्ज की गई।

4.22 समूह स्तर पर, 2016-17 में खाद्य मुद्रास्फीति में अंतरराज्यीय घट-बढ़ आवास, ईंधन और प्रकाश तथा

चित्र 14. सीपीआई मुद्रास्फीति 2016-17 (प्रतिशत)

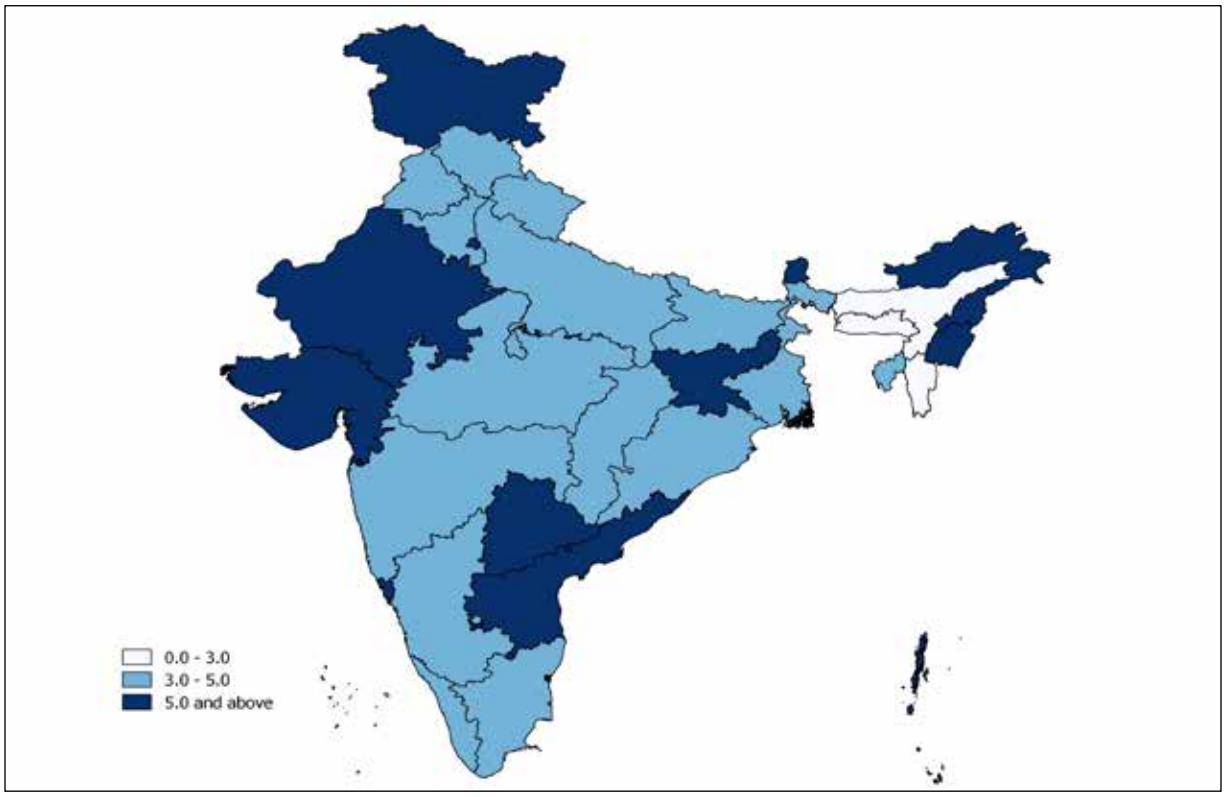

चित्र 15. सीपीआई मुद्रास्फीति 2015-16 (प्रतिशत)

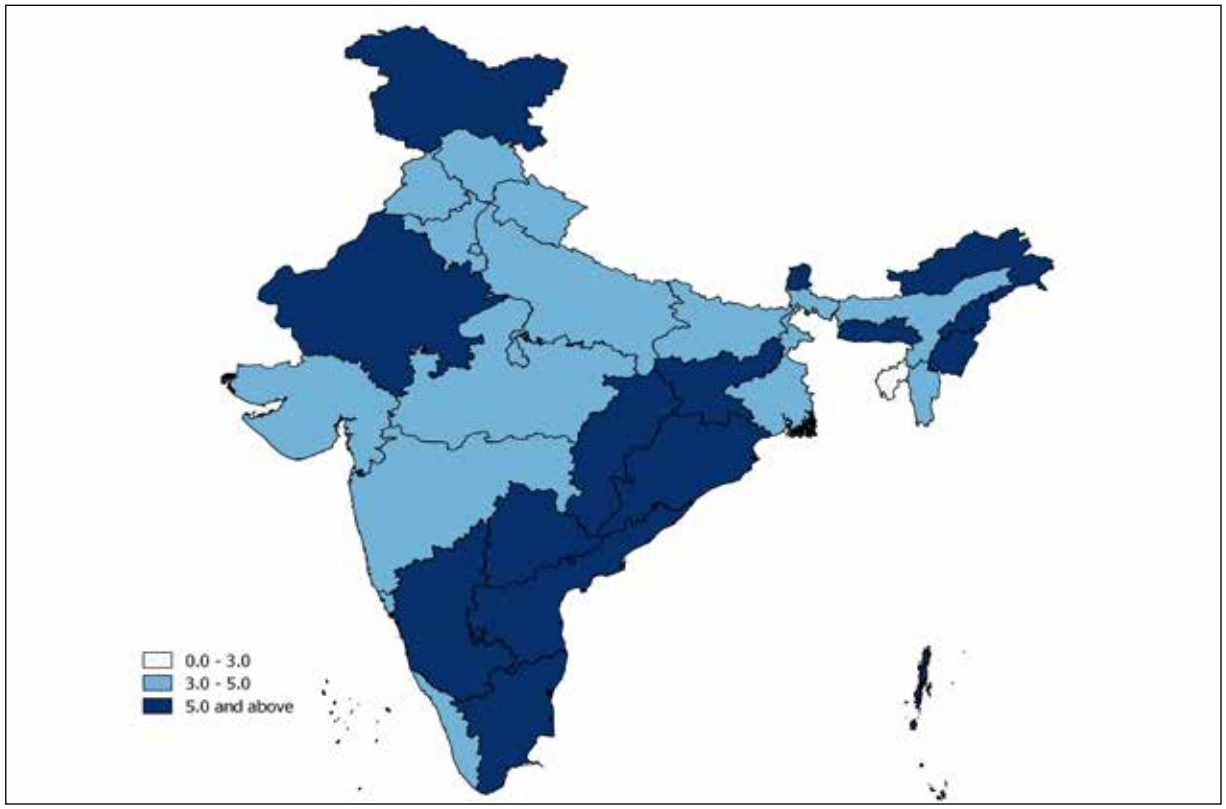

स्रोत: **सीएसओ, समीक्षा परिकलन**

टिप्पणी: **अरुणाचल प्रदेश की मुद्रास्फीति केवल ग्रामीण क्षेत्र के संबंध में है।**

पान, तंबाकू और नशीले पदार्थों की तुलना में कम रही है (चित्र 16)। खाद्य श्रेणी में अधिकतम अंतरराज्यीय घट-बढ़ चीनी और दालों में देखी गई है, जिनमें वर्ष 2016-17 में उच्च मुद्रास्फीति देखी गई (चित्र 17)। तथापि, प्रमुख राज्यों में अनाज में हुई घट-बढ़ बहुत कम रही है।

चित्र 16. 2016-17 में प्रमुख राज्यों में सीपीआई मुद्रास्फीति में परिवर्तन: प्रमुख समूहों में मानक विचलन

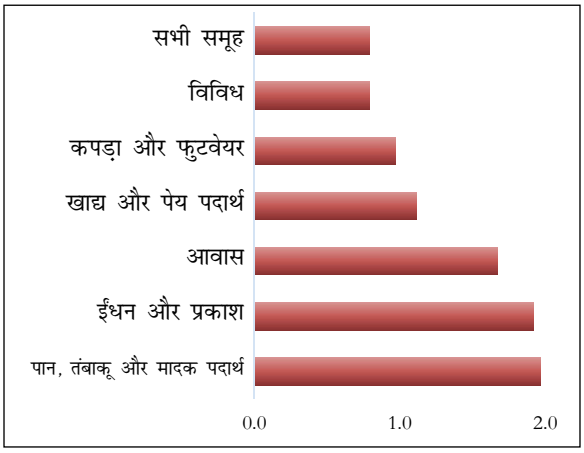

चित्र 17. 2016-17 में प्रमुख राज्यों में सीपीआई मुद्रास्फीति में परिवर्तन: खाद्य समूहों में मानक विचलन

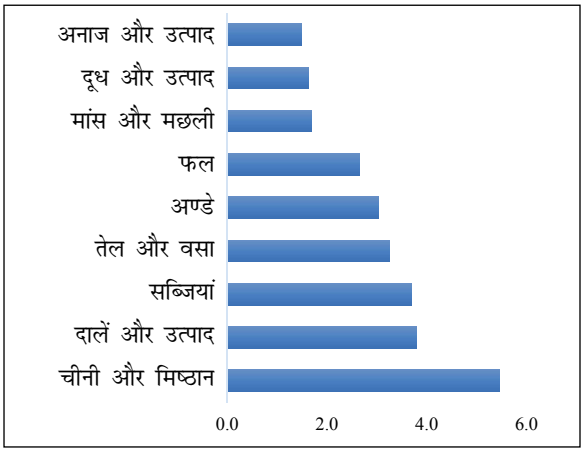

स्रोत: **सीएसओ, समीक्षा परिकलन**

बॉक्स 1. कम खाद्य मुद्रास्फीति-गरीबों को राहत

भारत में मुद्रास्फीति आमतौर पर खाद्य मदों की कीमतों से संचालित होती है। खाद्य मदें, जो गरीबों के उपभोग व्यय का बड़ा हिस्सा होती हैं, उनका सीपीआई समूह में उच्च भारांश है। खाद्य कीमतों में वृद्धि के कारण हुई उच्च मुद्रास्फीति गरीबों को अधिक आघात पहुंचाती है। इसके विपरीत, खाद्य मुद्रास्फीति में कमी का आबादी के अपेक्षाकृत गरीब वर्गों पर लाभकर असर होता है। हैडलाइन सीपीआई मुद्रास्फीति में हालिया गिरावट मुख्यत: खाद्य मुद्रास्फीति, विशेषकर दालों और सब्जियों की कीमतों में गिरावट के कारण है। इसका जनसंख्या के निध न वर्गों पर अनुकूल असर पड़ा है जैसा कि चित्र 18 में देखा जा सकता है।

चित्र 18. विभिन्न डिसाईल समूहों के लिए सीपीआई मुद्रास्फीति (प्रतिशत में)

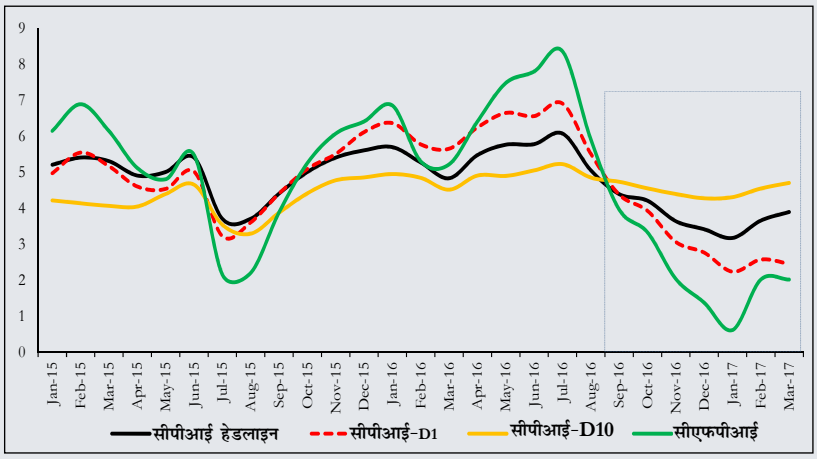

स्रोत: **सीएसओ, समीक्षा परिकलन**

चित्र 18 में उपभोक्ता व्यय आंकड़ों पर आधारित समाज के निम्नतम और उच्चतम डिसाईल के लिए सीपीआई मुद्रास्फीति दर्शायी गयी है। (एनएसएस के उपभोक्ता व्यय आंकड़ों के 68वें दौर के आधार पर, डिसाईलवार सूचकांक और मुद्रास्फीति आकलित करने के लिए सीपीआई-संयुक्त के मद स्तर सूचकांक को डिसाईलवार भारांश दिए गए हैं और प्रयुक्त किए गए हैं)। इस चित्र में दिखाया गया है कि सितंबर, 2016 से मुद्रास्फीति उच्चतम डिसाईल (डी-10) और हैडलाइन सीपीआई के मुकाबले निम्नतम डिसाईल (डी-1) के संबंध में कम रही है। इसके अलावा, निम्नतम डिसाईल के लिए सीपीआई मुद्रास्फीति ने प्राय: खाद्य मुद्रास्फीति (सीएफपीआई) के रूझान का ही अनुसरण किया है, जिसकी वजह उच्चतम दशमंक की तुलना में न्यूनतम दशमंक के लिए खाद्य मदों का अधिक भारांश होना है। जैसाकि चित्र से स्पष्ट है, कम खाद्य मुद्रास्फीति समृद्ध वर्ग के मुकाबले गरीबों को अपेक्षाकृत अधिक लाभान्वित करती है और प्रतिलोमत: भी ऐसा ही होता है।

बाक्स 2. वैश्विक और डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति

तेल का प्रभाव और प्रतिकूल आधार-प्रभाव डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति को बढ़ाते हैं

डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति नवंबर, 2014 से जून, 2016 तक नकारात्मक बनी रही है और 2015-16 में औसतन(-) 3.7 प्रतिशत रही जिसकी आंशिक वजह विश्व स्तर पर वस्तुओं की कीमतों का कमजोर पड़ना था। तथापि, वैश्विक वस्तु कीमतों में, विशेषकर कच्चे तेल की कीमतों में, आए उछाल के साथ-साथ प्रतिकूल आधार-प्रभाव ने डब्ल्यूपीआई में गिरावट के रूझान को उलट दिया है। विश्व बैंक ऊर्जा सूचकांक पर आधारित वैश्विक ऊर्जा मुद्रास्फीति 2015-16 के (-) 43 प्रतिशत के निम्न स्तर से बढ़ती हुई 2016-17 में 4.0 प्रतिशत हो गयी तथा बेस धातुओं की मुद्रास्फीति 2015-16 के (-) 20.2 प्रतिशत से बढ़कर 2016-17 में 4.1 प्रतिशत हो गयी। ईंधन और धातुओं में व्याप्त डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति ने प्राय: अंतरराष्ट्रीय रूझान का ही अनुसरण किया है और यह वृद्धि के रुख पर है (चित्र 19 और 20)।

चित्र 19. विश्व बैंक कीमत सूचकांक पर आधारित वैश्विक मुद्रास्फीति(%)

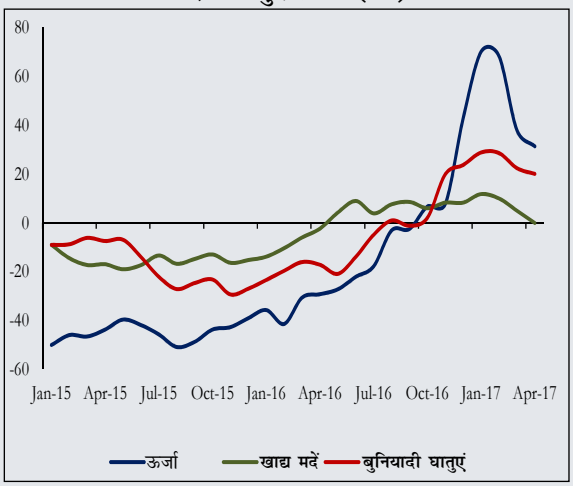

चित्र 20. थोक कीमत सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति(%)

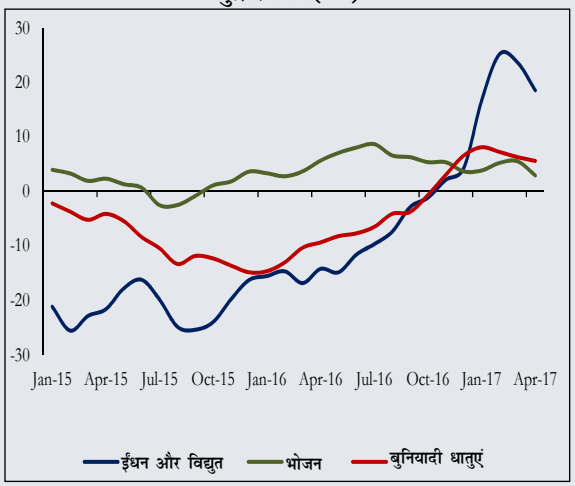

बॉक्स 3. आधार वर्ष 2011-12 वाले थोक कीमत सूचकांक की नई श्रृंखला की मुख्य विशेषताएं

सरकार ने अप्रैल, 2017 से थोक कीमत सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) का आधार वर्ष 2004-05 से संशोधित करके 2011-12 कर दिया है। डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति कृषि, खनन, विनिर्माण और बिजली के चार क्षेत्रों से संबंधित लेनदेनों के प्रारंभिक चरण के स्तर पर, थोक बिक्री के संबंध में वस्तुओं की कीमतों में हुए औसत परिवर्तन को मापता है। वर्ष 2011-12 में चालू कीमतों पर जीडीपी में इन चार क्षेत्रों का हिस्सा 41.4 प्रतिशत था। डब्ल्यूपीआई के समूह में तीन प्रमुख समूहों, नामत: प्राथमिक वस्तुएं, ईंधन और विद्युत तथा विनिर्मित उत्पादों के अंतर्गत आने वाली वस्तुएं शामिल हैं। ट्रैक की जा रही कीमतें विनिर्मित उत्पादों के लिए फैक्ट्री कीमत, कृषि जिंसों के लिए मंडी कीमत और खनिजों के लिए खनन कीमत हैं। डब्ल्यूपीआई समूह में शामिल प्रत्येक वस्तु को दिए गए भारांश निवल आयातों के लिए समायोजित उत्पादन के मूल्य पर आधारित हैं। डब्ल्यूपीआई समूह में सेवाएं शामिल नहीं की गई हैं। डब्ल्यूपीआई 2004-05 और डब्ल्यूपीआई 2011-12 के बीच भारांश, मदों की संख्या और कोटेशनों में हुए बड़े परिवर्तन सारणी 4 में दिए गए हैं।

नई डब्ल्यूपीआई श्रृंखला (2011-12) में संकल्पना, कवरेज और कार्य-विधि के संदर्भ में महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। मद समूहों में संशोधन करके नई मदें को शामिल और पुरानी मदों को बाहर किया गया है ताकि इसके जरिए अर्थव्यवस्था में हुए ढांचागत परिवर्तनों को परिलक्षित किया जा सके। नवीन डब्ल्यूपीआई समूह में मदों की संख्या बढ़ाई गई है और विभिन्न समूहों की कीमत कोटेशनों की संख्या बढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं ताकि व्यापक कवरेज और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके।

सारणी 4. भारांश, मदों की संख्या तथा कोटेशनों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

प्रमुख समूह/समूह	भारांश		मदों की संख्या		कोटेशनों की संख्या	
	2004-05	2011-12	2004-05	2011-12	2004-05	2011-12
सभी वस्तुएं	100	100	676	697	5482	8331
प्राथमिक वस्तुएं	20.12	22.62	102	117	579	983
ईंधन और विद्युत	14.91	13.15	19	16	72	442
विनिर्मित उत्पाद	64.97	64.23	555	564	4831	6906

नई डब्ल्यूपीआई श्रृंखला में निम्नलिखित महत्वपूर्ण संकल्पनात्मक और कार्य-विधि संबंधी परिवर्तन किए गए हैं:

- संकलन के लिए इस्तेमाल कीमतों में अप्रत्यक्ष कर शामिल नहीं है, ताकि राजकोषीय नीति का असर हटाया जा सके। यह श्रेष्ठतम अंतर्राष्ट्रीय परिपाटियों के अनुरूप है और यह नई डब्ल्यूपीआई को संकल्पना की दृष्टि से ''उत्पादक कीमत सूचकांक'' के अधिक नजदीक ले आता है। इसके लिए जीएसटी कार्यान्वित हो जाने के बाद कीमत संग्रहण में परिवर्तन किए जाने की भी जरूरत नहीं होगी।
- नई श्रृंखला में ''डब्ल्यूपीआई खाद्य सूचकांक'' संकलित करने का भी प्रावधान है। यह सूचकांक खाद्य मदों और विनिर्मित खाद्य उत्पादों के सूचकांकों को मिलाकर संकलित किया जाता है। यह सूचकांक और सीएसओ द्वारा प्रकाशित सीपीआई खाद्य कीमत सूचकांक खाद्य मुद्रास्फीति को कारगर ढंग से मानीटर करने में मदद करेगा।
- नई डब्ल्यूपीआई के लिए मद स्तर के सकल समंक श्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय परिपाटियों का पालन करते हुए ज्यामितीय औसत (जीएम) को इस्तेमाल करके संकलित किए गए हैं तथा इस समय अखिल भारतीय सीपीआई के संकलन के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं। ज्यामितीय औसत को श्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि यह अधिकतर स्वत: सिद्ध परीक्षाओं से गुजरता है, जैसेकि समय-परिवर्तन जांच इत्यादि और इस परिवर्तन द्वारा इस श्रृंखला में असंतुलनों को कम किए जाने की संभावना है।
- फलों और सब्जियों से जुड़े मौसमी कारकों की अधिक महीनों तक व्याप्ति के लिए अद्यतित किया गया है क्योंकि अब ये मदें लंबी अवधि के लिए उपलब्ध होती हैं। इस समूह में इन मदों का अधिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए अनेक प्रकार के फलों और सब्जियों को शामिल किया गया है।
- विनिर्मित उत्पादों में दो अंकीय समूहों की संख्या एनआईसी-2008 के अनुरूप रखते हुए 12 से बढ़ाकर 22 कर दी गई है।
- अर्थव्यवस्था के बदलते ढांचे के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए पहली बार एक उच्च स्तरीय तकनीकी समीक्षा समिति गठित की गई है जो गतिशील समीक्षा का कार्य करेगी।

जैसाकि चित्र 21 में दर्शाया गया है, दोनों श्रृंखलाओं पर आधारित वार्षिक मुद्रास्फीति अनुमान साथ-साथ चल रहे हैं और उनमें कोई बड़ा विचलन नहीं दिखायी देता, सिवाय इसके कि नई श्रृंखला नए आधार के कारण यथाप्रत्याशित मुद्रास्फीति के अपेक्षाकृत कम स्तर दिखा रही है।

चित्र 21. हेडलाइन डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति (2011-12 श्रृंखला तथा 2004-05 श्रृंखला)

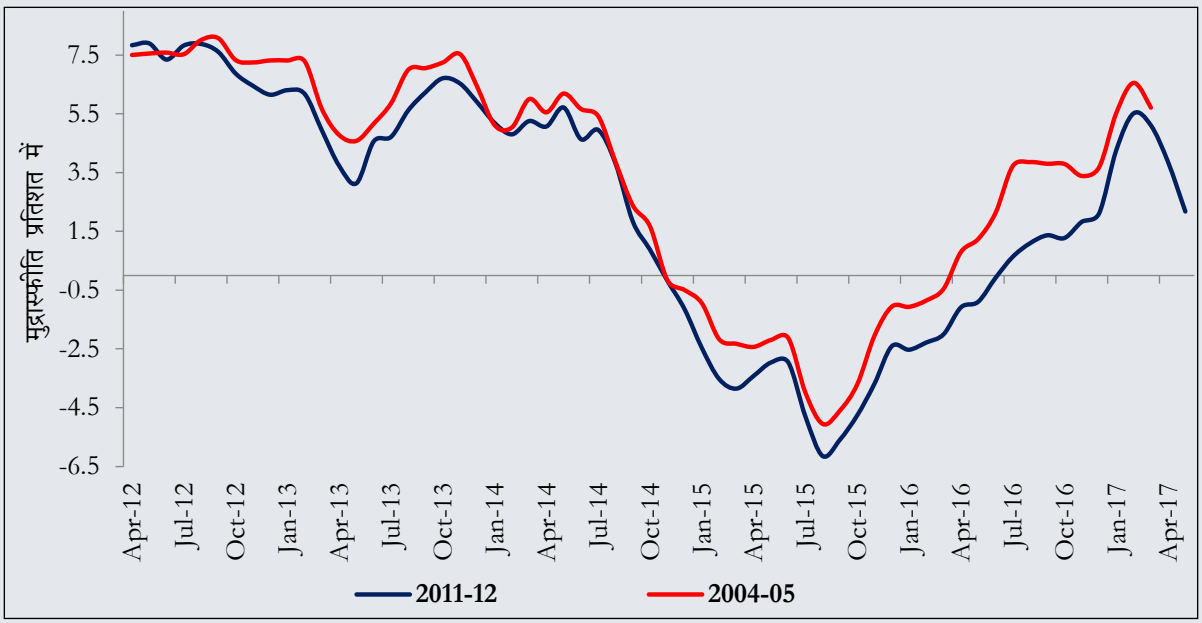

स्रोत: डीआईपीपी

IV. मुद्रास्फीति पर काबू पाने के प्रयास

4.23 सरकार कीमत स्थिति की नियमित रूप से समीक्षा करती है क्योंकि मुद्रास्फीति पर काबू पाने को सरकार सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। खाद्य मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। इन उपायों में अन्य के साथ-साथ निम्नलिखित शामिल है:-

- बजट 2017-18 में कीमत स्थिरीकरण कोष के लिए अधिक आवंटन, ताकि आवश्यक वस्तुओं, विशेषकर दालों की कीमतों में व्याप्त अस्थिरता पर रोक लगायी जा सके।

- सरकार ने उपयुक्त बाजार दखल कार्रवाई के लिए 20 लाख टन दालों के सक्रिय बफर स्टॉक के निर्माण को मंजूरी दी है जिसमें से लगभग 18.75 लाख टन का बफर स्टॉक पहले ही बनाया जा चुका है।
- जनता को वाजिब दाम पर सीधे वितरण के लिए राज्यों/एजेंसियों को इस बफर स्टॉक में से सब्सिडीयुक्त दलनपूर्व दालों की पेशकश की गई थी।
- राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को आवश्यक वस्तु अधिनियम के अंतर्गत दालों, प्याज, खाद्य तेल और खाद्य तिलहनों के संबंध में भंडारण सीमा लागू करने की शक्तियां दी गई हैं।
- काबुली चना तथा 10 हजार मीट्रिक टन तक ऑर्गेनिक दालों और मसूर दाल को छोड़कर सभी दालों के निर्यात पर रोक लगा दी गई है।
- दालों का आयात शून्य आयात शुल्क पर करने की अनुमति दी गई है, इसमें तूर दाल को शामिल नहीं किया गया है, जिसके संबंध में 2016-17 में भारी उत्पादन को देखते हुए 10 प्रतिशत आयात शुल्क लागू किया गया है।
- सेबी ने सट्टेबाजी पर नियंत्रण के लिए चने के संबंध में नई संविदाएं करने पर रोक लगा दी है।
- उच्च न्यूनतम समर्थन कीमतों की घोषणा की गई है ताकि अनाजों के उत्पादन को प्रोत्साहित किया जा सके और ऐसा करके खाद्य पदार्थों की उपलब्धता में वृद्धि की जा सके जिससे कीमतों को कम करने में सहायता प्राप्त होगी।
- खाद्य तेलों के निर्यात की अनुमति 900 अमरीकी डालर प्रति मीट्रिक टन के न्यूनतम निर्यात कीमत पर केवल 5 किलोग्राम तक के ब्रॉन्डेड उपभोक्ता पैकों में ही करने की अनुमति दी गई है। इस प्रतिबंध में हाल ही में ढील दी गई है।
- दिसम्बर, 2016 तक आलू के संबंध में 360 अमरीकी डालर प्रति मीट्रिक टन न्यूनतम निर्यात कीमत लागू की गई थी।
- आलू, गेहूं और ताड़ तेल पर आयात शुल्क में कमी की गई है।
- चीनी के निर्यात पर 20 प्रतिशत शुल्क लगाया गया है।
- सट्टे बाजारी की प्रवृत्ति तथा संभावित जमाखोरी पर रोक लगाने के लिए चीनी पर 28.10.2017 तक भण्डारण सीमा तथा टर्नओवर सीमा लागू की गई है।
- हाल ही में घरेलू बाजार में उपलब्धता में वृद्धि करने के लिए 500,000 टन अपरिष्कृत चीनी के नि:शुल्क आयात की अनुमति दी गई है।

V. निष्कर्ष

4.24 वर्तमान में मुद्रास्फीति के कम स्तर पर बने रहने से इसके परिदृश्य में एक ऐसा ऐतिहासिक मौका सामने आया है जिससे कीमतों के स्थिर बने रहने का विश्वास उपजा है। 2016-17 के दौरान, सीपीआई मुद्रास्फीति घटकर 4.5 प्रतिशत रह गई है तथा सभी प्रमुख वस्तु समूहों में कीमतों में व्यापक कमी देखी गई है। पिछले आठ महीनों के दौरान यह 4 प्रतिशत से कम के स्तर पर बनी हुई है। अंतर्निहित रूझानों की मापक-कोर मुद्रास्फीति में पिछले कुछ महीनों में गिरावट का रूझान प्रदर्शित हुआ है। सामान्य मानसून के कारण खाद्य मुद्रास्फीति में भी पिछले कुछ महीनों के दौरान तेजी से कमी आयी है।